

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 2: कलियुग के लक्षण

13 September 2026



श्रीशुकदेव वर्णन करते हैं कि कलियुग के बढ़ने के साथ प्रत्येक सद्गुण किस प्रकार क्रमशः क्षीण होता जाता है और संसार दुष्टों के वश में आ जाता है — जब तक कि, युग के अन्त में, भगवान् स्वयं कल्कि रूप में प्रकट होकर धर्म की पुनर्स्थापना करते और एक नए सत्ययुग का सूत्रपात करते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में कलि के राजाओं की दीर्घ शृंखला का वर्णन कर चुकने के पश्चात्, श्रीशुकदेव अब वंशों के बाह्य इतिहास से मुड़कर स्वयं युग की आन्तरिक अवस्था की ओर ध्यान देते हैं। द्वादश स्कन्ध का यह द्वितीय अध्याय सम्पूर्ण शास्त्र के सर्वाधिक उद्धृत अंशों में से एक है, क्योंकि इसमें ऋषि, लक्षण-दर-लक्षण, ठीक-ठीक उघाड़ देते हैं कि कलियुग के गहराने के साथ मानव-समाज किस प्रकार बदलेगा: कैसे सत्य, दया, शौच तथा स्मृति-बल सब चुपचाप क्षीण हो जाएँगे, कैसे धन प्रत्येक मूल्य का मापदण्ड बन जाएगा, और कैसे सम्पूर्ण पृथ्वी अन्ततः लोभी तथा क्रूर लोगों से भर जाएगी। फिर भी अध्याय अन्धकार में समाप्त नहीं होता। श्रीशुकदेव युग के इस निम्नतम क्षण से आगे देखते हैं — भगवान् के

कल्कि रूप में प्रतिश्रुत अवतरण की ओर, जो संसार को शुद्ध करके सत्ययुग के स्वर्णिम काल की पुनर्स्थापना करेंगे। यह पतन का एक ऐसा चित्र है जो नवीनीकरण के एक अटूट वचन से घिरा है — हमारे अपने समय के समक्ष रखा गया एक दर्पण, और उससे परे थमा हुआ एक दीपक।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 2 (द्वितीय अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: कलियुग के लक्षण
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को सम्बोधित करते हुए; सूत गोस्वामी की नैमिषारण्य के ऋषियों को कही कथा के भीतर
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; तथा नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थान: गंगा का तट, जहाँ परीक्षित अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, नैमिषारण्य के वन-आश्रम के भीतर
- मुख्य विषय-वस्तु: कलियुग में सद्गुणों का क्रमिक ह्रास, मानव-समाज का पतन, भगवान् का कल्कि रूप में अवतरण, तथा सत्ययुग की पुनरागति; तत्पश्चात् युगों की गणना
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 2, श्लोक 1-44
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

प्रत्येक सद्गुण का धीमा क्षय

श्रीशुकदेव एक शान्त, शोकपूर्ण सूची से आरम्भ करते हैं। दिन-प्रतिदिन, वे कहते हैं, सर्वशक्तिमान् काल के बल से, मानवता के महान् सद्गुण क्रमशः क्षीण होते जाएँगे — धर्म, सत्य, शौच (मन और शरीर की शुद्धि), क्षमा, दया, आयु, शारीरिक बल तथा स्मृति की तीक्ष्णता, सब साथ ही घटते जाएँगे।

श्रीशुक उवाच

ततश्चानुदिनं धर्मः सत्यं शौचं क्षमा दया ।

कालेन बलिना राजन् नङ्क्ष्यत्यायुर्बलं स्मृतिः ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca tataś cānu-dinaṁ dharmāḥ satyaṁ śaucaṁ kṣamā dayā kālena balinā rājan naṅkṣyaty āyur balaṁ smṛtiḥ

अर्थ: श्रीशुक ने कहा: तत्पश्चात्, हे राजन्, दिन-प्रतिदिन बलवान् काल के बल से धर्म, सत्य, शौच, क्षमा, दया, आयु, शारीरिक बल तथा स्मृति — सब क्षीण होते जाएँगे। (स्कन्ध 12, अध्याय 2, श्लोक 1)

यह आरम्भ करने का एक विलक्षण ढंग है। श्रीशुकदेव किसी खलनायक, किसी अत्याचारी, किसी एक कारण का नाम नहीं लेते; वे स्वयं काल का नाम लेते हैं — वह शान्त, अप्रतिरोध्य बल जिसके अधीन ये निधियाँ खिसकती चली जाती हैं। कलि की त्रासदी कोई अकस्मात् विपत्ति नहीं, अपितु एक धीमा विस्मरण है।

युग के चिह्न

तत्पश्चात् श्रीशुकदेव, तीखे आघातों की एक शृंखला में, उन मूल्यों का चित्र खींचते हैं जिनसे कलि के लोग जिएँगे। केवल धन, वे कहते हैं, अच्छे जन्म, अच्छे आचरण तथा अच्छे गुणों का चिह्न माना जाएगा; और केवल बल यह निर्णय करेगा कि क्या न्याय्य तथा उचित कहलाता है।

वित्तमेव कलौ नृणां जन्माचारगुणोदयः ।

धर्मन्यायव्यवस्थायां कारणं बलमेव हि ॥ २ ॥

vittam eva kalau nṛṇāṃ janmācāra-guṇodayaḥ dharma-nyāya-vyavasthāyām kāraṇaṃ balam eva hi

अर्थ: कलियुग में केवल धन ही मनुष्य के अच्छे जन्म, उचित आचरण तथा श्रेष्ठ गुणों का चिह्न माना जाएगा; और केवल बल ही धर्म तथा न्याय की व्यवस्था का निर्णायक कारण होगा। (स्कन्ध 12, अध्याय 2, श्लोक 2)



कलियुग में धन ही मूल्य का एकमात्र मापदण्ड और बल ही न्याय का एकमात्र निर्णायक बन जाता है, जबकि वाणी की चतुराई को विद्वत्ता और बाह्य आडम्बर को पवित्रता समझ लिया जाता है (श्लोक 2-6)।

यह सूची निर्भीक तथा सटीक होकर चलती रहती है। विवाह केवल परस्पर सहमति पर आधारित होगा; व्यापार में सफलता छल पर टिकी होगी। यज्ञोपवीत तथा बाह्य चिह्न ही सच्चा धर्म माने जाएँगे; एक दूर का स्नान ही तीर्थ के समान समझ लिया जाएगा। वाणी की वाचालता विद्वत्ता के लिए, निर्धनता दुष्टता के प्रमाण के लिए, और पाखण्ड सद्गुण के लिए समझ लिया जाएगा। अपना पेट भरना ही जीवन का समग्र लक्ष्य बन

जाएगा, और जिह्वा की धृष्टता ही सत्यता के लिए समझ ली जाएगी। इन श्लोकों को शताब्दियों के पार पढ़ते हुए, ऐसा प्रतीत होता है मानो ऋषि केवल किसी दूरस्थ भविष्य के समक्ष ही नहीं, अपितु प्रत्येक मानव-हृदय के चिरन्तन प्रलोभनों के समक्ष भी एक दर्पण थामे हों।

एक ग्रस्त संसार

ज्यों-ज्यों युग नीचे उतरता है, श्रीशुकदेव कहते हैं, सभी वर्गों में जो सबसे बलवान होगा वही सत्ता हथियाकर राज्य करेगा। लोभी, निर्दय शासकों द्वारा — जो डाकुओं की भाँति व्यवहार करते हैं — अपने धन और यहाँ तक कि अपने परिवारों से भी लूटी गई सामान्य प्रजा पर्वतों तथा वनों में भाग जाएगी, और पत्ते, कन्द-मूल, जंगली मधु तथा फलों पर जीवित रहेगी। अकाल तथा भारी कर से पीड़ित, भूख, प्यास तथा चिन्ता से त्रस्त, मनुष्य अल्पायु हो जाएँगे — उनका जीवनकाल बीस या तीस वर्ष तक सिमट जाएगा — और शरीर से बौने हो जाएँगे। वेदों की सम्पूर्ण व्यवस्था, वर्णों तथा आश्रमों का श्रेणीबद्ध सामञ्जस्य, प्रायः लुप्त हो जाएगा; शासक चोर बन जाएँगे, और मानवता के उच्चतर गुण पृथ्वी से लगभग लुप्त हो जाएँगे।



निर्दय शासकों द्वारा लूटी गई और अकाल तथा कर से कुचली गई गहराते कलियुग की प्रजा पर्वतों तथा वनों में भाग जाती है, और पत्तों, कन्द-मूल तथा जंगली मधु पर जीवित रहती है (श्लोक 7-9)।

कल्कि का अवतरण

ठीक उसी क्षण जब युग अपने सर्वाधिक अन्धकारमय बिन्दु तक उतर चुका होता है, श्रीशुकदेव का स्वर ऊपर उठता है, क्योंकि अब वे वह महान् वचन प्रकट करते हैं जो सम्पूर्ण भविष्यवाणी को उद्धार देता है। जब कलि का प्रवाह लगभग पूर्ण हो चुका होगा, तब भगवान् — विश्व की आत्मा, समस्त सृष्टि के आराध्य — स्वयं शुद्ध सत्त्व के रूप में अवतरित होकर धर्मियों की रक्षा करेंगे और धर्म की पुनर्स्थापना करेंगे। वे प्रकट होंगे, श्रीशुकदेव कहते हैं, कल्कि नाम से, शम्भल ग्राम के प्रमुख, महात्मा ब्राह्मण विष्णुयशा के घर में।

शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥ १८ ॥

śambhala-grāma-mukhyasya brāhmaṇasya mahātmanaḥ bhavane viṣṇuśaśaḥ kalkiḥ prādurbhaviṣyati

अर्थ: शम्भल ग्राम के प्रमुख, महात्मा ब्राह्मण विष्णुयशा के घर में भगवान् कल्कि प्रकट होंगे। (स्कन्ध 12, अध्याय 2, श्लोक 18)

श्रीशुकदेव इस अवतरण का वर्णन सजीव, गौरवमय विस्तार से करते हैं। देवदत्त नामक एक द्रुतगामी अश्व पर आरूढ़, आठों सिद्धियों से युक्त, तथा अनुपम तेज एवं समस्त गुणों से सम्पन्न, विश्वपति समस्त पृथ्वी पर विचरण करेंगे, और अपनी तलवार से करोड़ों की संख्या में उन डाकुओं का संहार करेंगे जो केवल राजाओं का वेश धारण किए हुए हैं।

अश्वमाशुगमारुह्य देवदत्तं जगत्पतिः ।

असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः ॥ १९ ॥

aśvam āśu-gam āruhya devadattam jagat-patiḥ asināsādhu-damanam aṣṭaiśvarya-guṇānvitaḥ

अर्थ: देवदत्त नामक द्रुतगामी अश्व पर आरूढ़ होकर विश्वपति — दुष्टों का दमन करने वाले, आठों ऐश्वर्यों तथा अनुपम तेज से युक्त — समस्त पृथ्वी पर विचरण करेंगे। (स्कन्ध 12, अध्याय 2, श्लोक 19)



युग के सर्वाधिक अन्धकारमय क्षण में, भगवान् कल्कि रूप में अवतरित होते हैं, देवदत्त नामक द्रुतगामी अश्व पर आरूढ़, अपनी तलवार से पृथ्वी को क्रूरता से शासन करने वालों से मुक्त करते हुए (श्लोक 18-20)।

स्वर्णिम युग की पुनरागति

जब डाकू-राजाओं का संहार हो चुकेगा, श्रीशुकदेव कहते हैं, तब नगर तथा ग्रामवासी लोगों के मन शुद्ध हो जाएँगे, मानो भगवान् के अपने अंग की पवित्र सुगन्ध ले जाती हुई एक पावन बयार से तरोताज़ा हुए हों। वासुदेव को हृदय में धारण किए, उनकी सन्तति पुनः बलवान हो जाएगी, और एक नयी, सात्त्विक स्वभाव की प्रजा जन्म लेगी। जब भगवान् हरि, धर्म के रक्षक, कल्कि रूप में प्रकट होंगे, तब सत्ययुग — सत्य का

स्वर्णिम युग — पृथ्वी पर पुनः व्याप्त होगा।

यदावतीर्णो भगवान् कल्किर्धर्मपतिर्हरिः ।

कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिश्च सात्त्विकी ॥ २३ ॥

yadāvatīrṇo bhagavān kalkir dharma-patir hariḥ kṛtaṁ bhaviṣyati tadā prajā-sūtiś ca sāttvikī

अर्थ: जब भगवान् हरि, धर्म के रक्षक, कल्कि रूप में अवतरित होंगे, तब सत्ययुग पुनः आरम्भ होगा, और प्रजा की सन्तति सात्त्विक, सद्गुणी स्वभाव की होगी। (स्कन्ध 12, अध्याय 2, श्लोक 23)



दुष्टों के विनष्ट हो जाने और भगवान् के प्रत्येक हृदय में विराजने के साथ, सत्ययुग का स्वर्णिम काल पुनः उदित होता है, और सद्गुणी, शुद्ध-हृदय लोगों की एक नयी पीढ़ी जन्म लेती है (श्लोक 21-23)।

इस अध्याय की मुख्य शिक्षाएँ

1. पतन काल के हाथों कोमलता से आता है। श्रीशुकदेव कलि के अन्धकार के लिए किसी एक खलनायक का नाम नहीं लेते — केवल स्वयं काल का, जो चुपचाप प्रत्येक सद्गुण को घिसता जाता है। यह हमें अपने ही हृदय में भलाई के धीमे क्षरण के प्रति सतर्क बनाए, भयभीत नहीं (श्लोक 1)।
2. युग के मिथ्या मापदण्डों से सावधान रहें। धन को मूल्य, बल को न्याय, चतुराई को ज्ञान, आडम्बर को पवित्रता समझना — कलि के ये चिह्न ठीक वे मूल्य हैं जिनके अनुसार जीने से हमें सचेत रूप से इनकार करना है (श्लोक 2-6)।
3. भगवान् संसार को कभी नहीं त्यागते। युग चाहे जितना अन्धकारमय हो जाए, कल्कि का अवतरण एक अटूट वचन के रूप में खड़ा है: धर्म की पुनर्स्थापना होगी, और स्वर्णिम युग लौटेगा (श्लोक 17-23)।

4. कृष्ण की उपस्थिति ही कलि के विरुद्ध कवच है। जब तक भगवान् ने पृथ्वी को स्पर्श किया, कलि उस पर प्रबल नहीं हो सका — एक शान्त शिक्षा कि युग के अन्धकार के विरुद्ध सबसे निश्चित सुरक्षा है भगवान् को अपने ही हृदय में विराजमान रखना (श्लोक 30-33)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय को एक निराशाजनक भविष्यवाणी के रूप में पढ़कर वहीं रुक जाना सरल है। किन्तु श्रीशुकदेव इसे निराशा के रूप में नहीं, अपितु स्पष्ट दृष्टि के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कलि के चिह्नों को जानना — यह पहचानना कि कब हम किसी को उसके धन से मापने, वाचालता को सत्य या आडम्बर को भलाई समझने को प्रलोभित होते हैं — यही आंशिक रूप से उनसे मुक्त होना है। ऋषि हमसे युग से भागने को नहीं कहते, अपितु उसके भीतर जाग्रत रहकर जीने को — उसके मिथ्या मापदण्डों से इनकार करते हुए और वासुदेव की सुगन्ध को हृदय में बनाए रखते हुए। और इस सम्पूर्ण गम्भीर सूची के नीचे आशा की एक ऐसी धारा बहती है जो कभी नहीं टूटती: वही काल जो प्रत्येक सद्गुण को घिसता है, स्वयं भगवान् के हाथों में है, जिन्होंने रात्रि के सर्वाधिक अन्धकारमय होने पर अवतरित होने का वचन पहले ही दे दिया है। तब भक्त के लिए यह अध्याय विनाश की भविष्यवाणी नहीं, अपितु एक निमन्त्रण है — अभी से, उन्हीं शुद्ध-हृदय आत्माओं में से एक बनने का, जिनमें स्वर्णिम युग चुपचाप पहले ही आरम्भ हो चुका है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, “कलि के चिह्नों” में से किसी एक को अपने ही मन में उठते हुए देखें — वह क्षण जब आप स्वयं को किसी को उसके धन, पद, या वाणी की चतुराई से मापते पाते हैं। कोमलता से उस मापदण्ड को एक ओर रख दें, और उसके स्थान पर अपने समक्ष उस आत्मा को उसी भगवान् का निवास-स्थान मानकर देखें जिन्होंने सबके कल्याण हेतु अवतरित होने का वचन दिया है। फिर, उनकी उपस्थिति को युग के विरुद्ध अपने कवच के रूप में हृदय में धारण करते हुए, धीरे-धीरे, कुछ बार दोहराएँ — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” युग के मिथ्या मापदण्डों से इनकार करने के इस छोटे-से कार्य में, सत्ययुग का प्रकाश यहीं और अभी, आपके भीतर जड़ पकड़ लेता है।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का द्वितीय अध्याय हमारे युग का भागवत-कृत निर्भीक निदान है — और उसका दीप्तिमान उपचार भी। श्रीशुकदेव गोस्वामी तीक्ष्ण सटीकता से वर्णन करते हैं कि कलियुग किस प्रकार सत्य, दया तथा प्रत्येक मानवीय सद्गुण का क्षरण करता है, और संसार लोभ तथा क्रूरता के भार तले किस प्रकार डूबता है; फिर भी वे इस सम्पूर्ण अवरोहण को भगवान् के कल्कि रूप में पुनरागमन की निश्चितता से घेर देते हैं, जो पृथ्वी को शुद्ध करके सत्य के स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना करेंगे। अध्याय की शक्ति इसी सन्तुलन में है: यह न तो युग की चापलूसी करता है, न उससे निराश होता है, अपितु श्रोता को उसके भीतर जाग्रत रहकर जीने का आह्वान करता है, भगवान् को हृदय में उस एकमात्र शरण के रूप में धारण किए जिसे कोई अन्धकार पराजित नहीं कर सकता। जैसा श्रीशुकदेव मरणासन्न राजा को स्मरण कराते हैं, ठीक जिस क्षण कृष्ण प्रस्थान करते हैं, कलि आरम्भ हो जाता है — और एक अकेले हृदय में भगवान् की उपस्थिति-मात्र उस अन्धकार को रोक रखने के लिए पर्याप्त है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-2-kaliyug-ke-lakshan-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

